बलिदान
या इब्राहीमी पंथ

अल्लामा अक़ील–उल–ग़रवी साहब किब्ला

यह चिन्तन विषय ''बलिदान'' जितना सुस्पष्ट है उतना ही गूढ़ और गहरा भी है। विशेष रूप से कुर्आन मजीद के परिप्रेक्ष्य में। जिसमें हमें फ़रिश्तों और हज़रत आदम[अ०] के परीक्षण से लेकर हज़रत इब्राहीम[अ०] के ''खुले हुए परीक्षण तक'' और ''खुली हुई परख'' से लेकर ''महान बलिदान'' तक, दूसरे के हित से अपने हित को पीछे रखने की परीक्षा और बलिदान, के कई आयाम एवंम स्तर से परिचय होता है।

2. ''कुर्बानी'' का शब्द उर्दू, हिन्दी और फ़ारसी भाषाओं में अरबी भाषा से आया है। अस्ल मूल में भी इसके वही अर्थ हैं जो उर्दू, हिन्दी और फ़ारसी भाषाओं में प्रयुक्त होते हैं। शहीदों के रहनुमा हज़रत हुसैन[अ०] बिन अली[अ०] बिन अबी तालिब[अ०] की प्रख्यात प्रार्थना है:–

''पालने वाले! हमारी ओर से यह बलिदान स्वीकार कर ले।''

कुर्आने मजीद में जो अरबी भाषा में ही है, यह शब्द तीन आयतों में आया है:–

I. सूरा अल इमरान तीसरा सूरा, 183वीं आयत।

II. सूरा मायिदा पांचवां सूरा, 30वीं आयत।

III. सूरा अहक़ाफ़ 66 वां सूरा, 28वीं आयत।

3. लेकिन इसकी धातु से व्युत्पन्न अन्य शब्द कुर्आन मजीद में बहुत आए हैं। ''कुर्बानी'' शब्द की धातु अथवा ''वाक् धमनी'' ''क़ाफ़, ''रे'' और ''बे'' है। इस धातु से व्युत्पन्न होने वाली शब्द माला में जो सम्मिलित अर्थ निहित है वह है कुरबत'' या ''तक़र्रुब'', ''निकटता'' अथवा ''सान्निध्य'' और निकटता के बाद जो अभिप्राय इस वाक श्रृंखला से सम्बन्धित बहुधा शब्दों से सम्ब; और उनके अर्थों में सम्मिलित है वह है ''काविश'' और ''काहिश'' और कुल्फ़त'' और ''अलम'' अर्थात गहरी खोद विनांन, घटाव, क्षीणता और क्षोम। उदाहरणार्थ:–

I. ''क़रिब'', ''क़रोबा'', ''कुर्बन'', ''कुर्बानन'' क़रीब होना, निकट होना।

II. ''क़रबा'' ''क़र्बन'', ''क़र्रबा'' व ''अक़रबा'' तलवार को खोल में प्रविष्ट करना।

III. ''क़रिबा'', ''क़रबन'' कोख की पीड़ा से ग्रस्त होना।

IV. ''क़रबा'' – निकट होना, दयालुता से बातचीत करना या किसी कार्य में मध्यमार्गी से काम लेना।

V. ''अक़रबा'' – गर्भवती का प्रसव के निकट होना या किसी बर्तन का लबालब भरना।

VI. ''क़िराबन'' – तलवार का खोल बनाना या चरवाहे द्वारा रात के समय ऊंटों को घाट पर पहुंचाने हेतु ले जाना।

VII. ''क़राबतुन'', ''कुर्बा'' – रिश्तेदारी, नातेदारी।

4. जो भी हो इसी धातु से ''कुर्बान'' का शब्द व्युत्पन्न है जो एक विशेष धार्मिक पवित्रता और आध्यात्मिक सार्थकता का पात्र है। इस

शब्द को एक अक्षर ''ये'' की बढ़ोत्तरी के साथ इसी धार्मिक पवित्रता और आध्यात्मिक सार्थकता के साथ फ़ारसी, उर्दू और हिन्दी भाषाओं में प्रयोग किया जा रहा है। अमितु निश्चय ही समस्त भाषाओं में ''कुर्बानी'' के पर्यायवाची शब्दों या यही अभिप्राय लिया जाता है और अब ''कुर्बान'' का बहुत सामान्य अभिप्राय है कि, ''परमेश्वर की राह में सान्निध्य हेतु अपनी गहरी खोद विनांन, घटाव, क्षीणता और क्षोभ के साथ वेदना सहाना न्योछावर करना।''

परन्तु कुर्बानी, बलिदान का यह सामान्य अभिप्राय बहुत सामान्य होते हुए भी व्यवहारिक रूप से एक विशेष चलन है, एक विशेष ढंग है, एक विशेष अनुसरण है, एक आदर्श है जो प्रत्येक ऐरे–ग़ैरे के भाग में नहीं आया। इसकी निस्बत महान कुर्आन ने, महान पैग़म्बरों में से एक जनाब इब्राहीम[अ०] से दी है। इस व्यवस्था के साथ कि पैग़म्बरी श्रंखला के अन्तिम व्यक्ति हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा[स०] को इस मिल्लत (इब्राहीमी पंथ) को अपनाने का अनुशासन हुआ।

''हे रसूल[स०]! हमने तुम्हारे पास ''वहि''भेजी कि इब्राहीम[अ०] के तरीक़े की पैरवी कर जो असत्य से कतरा के चलते थे।''

इस आयत का अर्थ कुर्आन के कुछ भाष्यकार यह बताते हैं कि ''इब्राहीमी पंथ'' से तात्पर्य ''इब्राहीम का धर्म हैं। जिसके अनुसरण का आदेश अन्तिम पैग़म्बर को दिया गया है। कुछ भाष्यकारों ने इस अर्थ के अनुमोदन में सूरा ''अन्आमि की एक आयत भी प्रस्तुत की है जिससे निश्चय ही इस अर्थ का अनुमोदन होता है।

''हे रसूल[स०]! तुम उनसे कहो कि मुझे तो मेरे परवरदिगार ने सीधी राह यानी एक सुदृढ़, इब्राहीम[अ०] के धर्म का निर्देश दिया है जो असत्य से कतरा के चलते थे और अनेकेश्वर वादियों में से न थे।''

5. किन्तु कुछ भाष्यकारों ने ''मिल्लते इब्राहीम'' का अनुवाद ''केशे इब्राहीम'', ''इब्राहीम की पद्धति'' और ''उनका विधान'' किया है। बहुत ही सादे ढंग से कुछ भाष्यकारों ने इस विषय में बड़े ही सीमित ऊपरी अर्थ लिए हैं और ''इब्राहीम की पद्धति या आप का विधान'' दस चीज़ों को बताया है जिसको अपनाने का आदेश ––इस्लाम के पैग़म्बर[स०]'' को दिया गया है। जैसे दाढ़ी रखना, मूछें कतरवाना, नाखून काटना, सिर के बालों का उचित ढंग से संवारना और ख़त्ना आदि।

6. एक महत्वपूर्ण भाष्य सम्बंधी बिन्दु:-

कुर्आन मजीद की अध्येता के सामने यह सदैव रहना चाहिए कि कुर्आन मजीद की किसी भी आयत के बारे में हम किसी भी कथन को जो ''बुद्धि द्वारा प्रतिष्ठित'' या धर्म सिद्धान्त'' और '' धर्म की अनिवार्यताओं'' के विरूद्ध न हो, बिल्कुल रद नहीं कर सकते। यहां तक कि कुछ कारणों से एक ही आयत के दो या दो से भी अधिक ऐसे अर्थ बताए जा सकते हैं। जो एक–दूसरे के पूर्णरूपेण अनुरूप न हों लेकिन उनमें से कोई भी कथन ''बुद्धि द्वारा प्रतिष्ठित''या धर्म सिधान्त या ''धर्म भी अनिवार्यता'' के विरूद्ध भी नहीं होता। ऐसे कारणों में किसी एक कथन को वरीयता देने या किसी कथन को रद करने के लिए बड़ी सूक्ष्म दृष्ठि और मनन की आवश्यकता होती है। क्योंकि कुर्आन वाहक हज़रत मोहम्मद[स०] अन्तिम पैग़म्बर और आपके पाप मुक्त उत्तराधिकारियों ने एक से अधिक अवसरों पर फ़रमाया है कि, कुर्आन का प्रत्यक्ष और है अप्रत्यक्ष कुछ और है, और उसके प्रत्यक्ष का भी प्रत्यक्ष है अप्रत्यक्ष का भी अप्रत्यक्ष है।'' यहां तक संकेत किये गये हैं कि कुर्आन की आयतों के सत्तर सत्तर अर्थ सम्बन्धी आयाम और दशाएं हैं।'' ऐसे ही ''नस'' (कुर्आन के स्पष्ट आदेश) के दृष्टिगत मैंने ''इरफान यह तफ़्हीमें कुर्आन का सुराग़नामा'' के शीर्षक से ''काएनात'' पत्रिका में प्रकाशित होने वाले कुर्आन के तफ़सीर सम्बन्धी निबन्धों में एक जगह लिखा था कि, ''यह किताब जो चमत्कार है.......

... अपने अन्तः करण में विश्वास की हद तक एक जुट होने के बावजूद अभिव्यक्ति के स्तर पर विभेद की सीमा तक बिखरी हुई है।

7. इस बिन्दु को दृष्टि में रखते हुए यह तथ्य भी सामने रहना चाहिए कि विधाता ने समझने और समझाने, अर्थ के खोलने–मूंदने और चिन्तन एवं चर्चा, याद करने और याद रखने का सूत्र भाषा को ठहराया है। कुर्आन मजीद में कई स्थानों पर कुर्आन के अध्येता का भाषा की ओर ध्यान दिलाया जा रहा है।

सूरा नह्ल में है (आयत 103)

''और यह तो साफ़–साफ़ अरबी ज़बान है''

सूरा यूसुफ़ (आयत 2) में है–

''हमने इस किताब (कुर्आन) को अरबी में अवतरित किया है ताकि तुम समझो''

इसके अतिरिक्त और भी बहुत से स्थानों पर भाषा की ओर ध्यान दिलाया गया है। (सूरा शुअरा आयत 190, सूरा ताहा आयत 113, सूरा रअ्द आयत 39)

8. अतः यह बात समझ में आती है कि किसी भी शोध पद्धति पर चिन्तन की सबसे युक्ति संगत और सबसे महत्वपूर्ण (Reasonable) अथवा सबसे तार्किक और वैज्ञानिक पद्धति (Scintific Method) हो सकती है कि चिन्तन का प्रारम्भ ''भाषा'' या ''शब्दज्ञान'' के स्तर से करना चाहिए और शोधाधीन विषय में आने वाले शब्दों और अक्षरों के अर्थ एवं अभिप्राय निर्धारित करने का प्रयत्न चाहिए। यह पद्धति सौभाग्य से बड़ी सीमा तक धर्मविधि की विवेचना और अनुसंधान की शैली एवं धर्मविधि सिद्धान्त मे ''शब्द विवेचना'' के रूप में विद्यमान है और एक सीमा तक प्रचलित भी है। किन्तु इसे अभाग्य माना जाए या दुर्योग कि इस शास्त्रीय पर्याय लोचन और अनुसंधान का जैसा कि आवश्यकता थी सामान्यीकरण न हो सका और कुर्आन मजीद का कोई एक भी भाग्य सैद्धान्तिक पद्धति पर नहीं लिखा गया।

9. कुर्आन मजीद के भाष्य और आयतों के अर्थ बोध से सम्बन्धित इन आवश्यक मौलिक संकेतों के उपरान्त हम विचाराधीन आयत की ओर ध्यान देते हैं।–

सूरा नहल आयत 123, ''हे रसूल[स०]! फिर तुम्हारे पास वहि भेजी कि इब्राहीम की पद्धति का अनुसरण करो जो असत्य से कतरा कर चलते थे''

इस आयत में ''मिल्लत'' का शब्द भरपूर ध्यान चाहता है। हमने ऊपर संकेत किया है कि इस आयत में ''मिल्लते इब्राहीम'' से एक विशेष ''इब्राहीमी आचरण'' तात्पर्य है जो ''बलिदान'' और ''न्योछावर'' होने का आचरण है।

10. ''मिल्लत'' शब्द की धातु अथवा वाक्–आधार ''मीम, ''लाम'' ''लाम'' है। इसी धातु से ''इमला'' का शब्द भी आता है। और इसी धातु से ''मलाल''का शब्द भी आता है। और ''मिल्लत'' शब्द के अर्थ आते हैं– ''धर्म'', ''धर्मविधि'' ''जीवन पद्धति'' ''प्राण प्रदेय धन''।

11. तफ़सीर ''मज्मउल बयान'' में, जो पाठ्य पुस्तक के रूप में आज तक एक आदर्श पाठ की हैसियत रखती है, ''मिल्लते इब्राहीमा हनीफ़'' की व्याख्या यह की गयी है कि – ''(इब्राहीम का) उपास्य की यकताई की ओर बुलाने का सीधा–सादा ढंग और उसके प्रति साक्षी शरीफ़ से बिलगांव एवं उसके आचरण पर व्यवहार करने का प्रत्यच ओर सहज ढंग एवं पद्धति जो भी हो ''मिल्लत–ए–इब्राहीम'' से तात्पर्य इस आयत में हज़रत इब्राहीम[अ०] की एक विशेष शैली और पद्धति है।

12. ''कुर्बानी'' शब्द के पर्याय लोचन में हम ऊपर निवेदन कर चुके हैं कि कुर्बानी धातु में जो मूल अर्थ निहित है वह ''कुर्बत'' है, ''सान्निध्य'' है। और यह बहुत स्पष्ट बात है कि किसी से सान्निध्य पाले के लिए एक विशेष आचरण एवं जीवन पद्धति की पाबन्दी की आवश्यकता होती है। किसी एक विशेष आचरण और जीवन पद्धति के प्रति प्रबिद्ध रहने में बहुत कुछ झेलना, सहना

और बहुत कुछ बलिदान करना पड़ता है। ईश्वरीय सान्निध्य के लिए भी एक विशेष आचरण और जीवन पद्धति है। परन्तु हज़रत इब्राहीम[अ०] ने एक ऐसा आचरण विशेष और पथ, ऐसी शैली और चलन का निरूपण किया था जो स्वतः अल्लाह ने उन्हीं से विशेष रखना आवश्यक समझा और उसे इब्राहीम[अ०] के साथ विशिष्ट रूप से सम्बद्ध करते हुए अपने मित्र अन्तिम पैग़म्बर[स०] से उसके अनुपालन की इच्छा व्यक्त की।

13. हज़रत इब्राहीम[अ०] का ''हनीफ़िया पंथ'' बलिदान का वह महिमामयी पंथ है, जो एक गहरा दर्शन भी है एक ऊंचा चिन्तन भी, एक मूल्यवान अनुभव भी है और एक विशाल मनमोहक हृदयंगम होने वाली परम्परा भी।

14. अल्लाह – एक मात्र उपास्य, से समीपता का वह दर्शन जिसमें दुई की पहुंच ही नहीं, बस उपास्य की एक विशुद्ध कल्पना है और सान्निध्य हेतु बलिदान एवं न्योछावर होने का एक अथाह भाव है, ऐसी मूल्यवान और रिन्तर क्रिया है जिसे इतिहास मेट न सके। अल्लाह के ख़लील इब्राहीम[अ०] की बलिदान–भावना और इस्माईल[अ०] की न्योछावर–भावना से लेकर अल्लाह के प्रिय अन्तिम पैग़म्बर[स०] के पु0 ''इब्राहीम'' के निधन की घटना और हुसैन[अ०] बिन अली[अ०] बिन अबी तालिब[अ०] की महान शहादत– ''ज़िब्हें अज़ीम, महान बलिदान'' तक।

15. बलिदान के इसी महिमामयी दर्शन, अनुभव और परम्परा की निरन्तरता को कुर्आन महान ने इन दो आयतों में प्रस्तुत किया है।

सूरा नहल आयत 123

''हे रसूल[अ०]! फिर तुम्हारे पास वहि भेजी कि तुम इब्राहीम के ढंग का अनुसरण करो।''

सूरा साफ़्फ़ाति आयत 107

''और हमने इस्माईल[अ०] का मुक्त प्रतिदान एक ज़ब्ह–ए–अज़ीम (महान कुर्बानी) नियत किया।''

ज़ेरे खंजर नमाज़ और दुआ।
''काबा क़ौसैन'' फ़ासिला न रहा।।
तिश्नगी, जंग, सब्र सज्दः–ए–शुक्र।
बस हमें आ गया यक़ीने ख़ुदा।।

●●●

पेज नं. 14 का शेष

इब्ने अब्दुल वहाब ने किसी तरह से उसकी पत्नी से सम्पर्क स्थापित किया और उसे पूरे नज्द पर राज्य करने का सपना दिखाया। यह मुहम्मद बिन सऊद उनकी बातों में आ गया और तन मन धन से उनका साथ देने पर तैयार हो गया और मुसलमानों को मुशरिक कहकर जिहाद के नाम पर उनकी जान, माल और इज़्ज़त के लूटने के लिए इब्ने अब्दुल वहाब के हाथ पर बैयत कर ली।

मुहम्मद बिन सऊद से समझौते के बाद मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नगर में आए और इब्ने सऊद ने एक बहुत बड़ी सेना तैयार कर के आस पड़ोस के मज़ारों को तोड़ने और जो मुसलमान रुकावट बने उनका खून बहाने के लिए भेज दिया। उन्होंने हर तरह इस कार्य को करने में राजा की बात मानी और हत्या, खून और लूटमार का बाज़ार गर्म हो गया। जब यहां पूरी सफलता हो गयी तो पास पड़ोस राजाओं के पास वहाबी विचारों को मानने के लिये पत्र लिखे कुछ नेतों धौंस में आकर बात मानली और जिन्होने ने नही मानी उनसे युद्ध के लिये दरइया के निवासियों को तैनात किया गया अतः नज्द के आस– पास और उससे आगे बढ़कर बहुत सख्त लड़ाई हुई।

जारी